

राम मिलन रो घणो रे उमावो भजन लिरिक्स



राम मिलन रो घणो रे उमावो,

दोहा – सावन आवन कह गयो,
कर गयो कोल अनेक,
गिणता गिणता घिस गई,
म्हारे आंगलिया री रेख ।

राम मिलन रो घणो रे उमावो,
नित उठ जोऊ बाटड़िया,
[राम मिलन](#) रो घणो रे उमावो।bd।

दरश बिना मोहे कछु ना सुहावे,
जक न पड़त है आंखड़िया,
तड़पत तड़पत बहु दिन बीते,
पड़ी बिरह की फासड़िया,
राम मिलन रो घणो रे उमावो।bd।

नैण दुःखी दरसन को तरसे,
नाभी न बैठे सांसड़िया,
रात दिवस हिय आरत मेरो,
कब हरि राखे पासड़िया,
राम मिलन रो घणो रे उमावो।bd।

दरश बिना मोहे कछु ना सुहावे,
जक न पड़त है रातड़ियां,
अब तो बेग दया करो प्यारा,
मैं हूँ थारी दासड़िया,
राम मिलन रो घणो रे उमावो।bd।

लगी लगन छुटण की नाहीं,
अब क्यूँ कीजे आटड़िया,
मीरा के प्रभु कब रे मिलोगे,
समस्त भजनों के लिरिक्स और विडियो बिना इन्टरनेट के भी अपने मोबाइल में देखने के लिए गूगल प्ले स्टोर या एप्पल
एप्प स्टोर से 'भजन डायरी एप्प' जरूर इनस्टॉल करे। वेबसाइट - <https://www.bhajandiary.com>



पूरो मन की आसड़िया,
राम मिलन रो घणो रे उमावो।bd।

राम मिलण रो घणो रे उमावों,
नित उठ जोऊ बाटड़िया,
राम मिलन रो घणो रे उमावो।bd।

स्वर – संत श्री अमृतराम जी महाराज ।
Upload by – Keshav
